

③ अर्थ के आधार पर शब्द के भेद-

- (i) → स्कार्थी शब्द
- (ii) → अनेकार्थी "
- (iii) → पर्यायवाची "
- (iv) → विलोम "
- (v) → युग्म/समानोच्चारित "
- (vi) → शब्द समूह/वाक्यांश के लिए एक शब्द
- (vii) → समान प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक "
- (viii) → समूहवाची "

(i) एकार्थी शब्द-

वे शब्द जो वर्षों से एक ही अर्थ में रुढ़ हो गए हैं, एकार्थी शब्द कहलाते हैं-

जैसे- स्त्री, भड़का, दिन, धूप, आकाश, नदी, पहाड़,
पुरुष, रूप, दीपक इत्यादि

विशेष- इन्हें 'रुढ़' शब्द भी कहते हैं।

(ii) अनेकार्थी शब्द -

वे शब्द जो अनेक अर्थों का बोध कराते हैं,

अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं -

मधु - मदिरा, चैतमास, शब्द, एक पैत्य, वसंत

अज - बकरा, जीव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कामदेव, दशरथकेपिताकानाम

वर्ण - अक्षर, रंग, ब्राह्मण आदि जातियाँ

सारंग - मोर, सर्प, हरिण, पपीटा, मेघ, हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष,
मधुमखी, भौरा, कर्मन्

हरि- विष्णु, सिंह, इंद्र, दायी, पहाड़, घोड़ा, सर्प, वानर, मेंढक,
यमराज, शिव, कोयल, किरण, हंस.

शिव- देव, महादेव, मंगल, भाग्यशाली, शृगाल.

राग- प्रेम, संगीत की ध्वनि, लाल रंग.

क्षेत्र- खेल, देह, तीर्थ, सदाव्रत बॉलने का स्थान.

सर- गंगा, पानी, दूध, अमृत, मधु, लालाब, पृथ्वी

राशि- मेष, कर्क, वृश्चिक आदि राशियाँ, समूह इत्यादि

- कर-** किरण, हाथ, सूँड़, लैक्स इत्यादि.
- गुण-** सील, स्वभाव, धनुष की डोरी, रस्सी, कौशल
- तत्त्व-** भाई, पूज्य, प्यारा, पिता, बड़ा, मित्र.
- कंचन-** काँच, निर्मल, सोना, धन-दौलत इत्यादि
- काल-** समय, अकाल, मृत्यु, यमराज, शिव, युग, मुहूर्त, अवसर इत्यादि.

- गुरु-** वृद्ध, शिक्षक, श्रेष्ठ, भारी, अक्षर, वृद्धस्पर्हि, पूज्य, आचार्य, द्विमात्रिक अक्षर, अपने से बड़े इत्यादि.
- जड़-** मूल कारण, अचेतन, मूर्ख, वृक्ष का मूल भाग, निजीवि
- द्विज-** दाँत, नख, पक्षी, ब्राह्मण, चन्द्रमा, केश, वैश्य, क्षत्रिय
- प्रसाद-** हर्ष, कृपा, नैवेद्य, अनुग्रह इत्यादि
- मित्र-** सूर्य, वरुण, अनुकूल, दोस्त, सहयोगी इत्यादि

रस- स्वाद, प्रेम, सुख, पानी, शरबत, अच्छा देखने से प्राप्त आनन्द

मंथि- जोड़, परस्पर, निश्चित, नालक के कथांश, युगों का मिलन,
व्याकरण के वर्णों का मिलन इत्यादि

हंस- श्वेत, योगी, जीव, सूर्य, ईश्वर, सरोवर का पक्षी,
मुक्त इत्यादि

त्रुटि- भूल, संशय, कमी, गलती, छोटी इसाइची का पौधा,
काल का एक सूक्ष्म विभाग, अंग-हीनता, प्रतिज्ञा-भंग, स्कंद की स्मृति।